Volume: 1 Issue: 16 Pages: 45-48

International Journal of Research in Academic World

E-ISSN: 2583-1615
Impact Factor: 4.714

Received: 05/November/2022 Int. J Res. Acad. World. 2022; 1(16):45-48 Accepted: 08/December/2022

उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन

[*1]अश्विनी कुमार और [2]प्रो0 राजेश कुमार सिंह

[*1]शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उतार प्रदेश, भारत।

[2]आचार्य शिक्षाशास्त्र विभाग, दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उतार प्रदेश, भारत।

सारांश

सा विद्याा या विमुक्तेय अर्थात गुरु शंकराचार्य कहते है कि शिक्षा वह है जो मुक्ति दिलाये । इन बातों से स्पष्ट होता है कि शिक्षक सभी दुखों से पार कराने वाला होता है। शिक्षक न केवल व्यक्ति का अपितु राष्ट का निर्माता होता है, जिसकी महत्ता हमेशा बनी रहती है। वेल्स के अनुसार "शिक्षक इतिहास का निर्माता होता है। राष्ट का इतिहास विद्यालयों में लिखा जाता है और विद्यालय अपने शिक्षकों की गुणवत्ता से बहुत भिन्न नहीं हो सकते।" इसी प्रकार की बातें कोठारी आयोग ने भी कहा है कि "राष्ट का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है और राष्ट निर्माण का यह पावन कार्य शिक्षक कर रहे है।" यद्यपि वर्तमान समय में शिक्षक के शिक्षकत्व के विषय में विचार करें तो ऐसा प्रतीत हो रहा है कि शिक्षक एक वेतनभोगी वृत्ति समूह बन गया है। विचारणीय प्रश्न यह बनता जा रहा है कि आज के शिक्षकों की अपने व्यवसाय के प्रति कितनी संतुष्टि है अर्थात शिक्षक अपने शिक्षण के कार्य से कितना संतुष्ट है। इन्ही सब प्रश्नों का उत्तर ढुढने के प्रयास में यह शोध का विषय शोधकर्ता ने बनाया है। अध्ययननोपरान्त ज्ञात होता है कि वर्तमान में उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि औसत से अधिक है।

मूल शब्दः शिक्षक, शैक्षिक स्तर, कार्य संतुष्टि

प्रस्तावना

सा विद्याा या विमुक्तये। अर्थात गुरु शंकराचार्य कहते है कि शिक्षा वह है जो मुक्ति दिलाये । इन बातों से स्पष्ट होता है कि शिक्षक सभी दुखों से पार कराने वाला होता है। शिक्षक न केवल व्यक्ति का अपितु राष्ट्र का निर्माता होता है, जिसकी महत्ता हमेशा बनी रहती है। वेल्स के अनुसार "शिक्षक इतिहास का निर्माता होता है। राष्ट्र का इतिहास विद्यालयों में लिखा जाता है और विद्यालय अपने शिक्षकों की गुणवत्ता से बहुत भिन्न नहीं हो सकते।" इसी प्रकार की बातें कोठारी आयोग ने भी कहा है कि "राष्ट्र का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है और राष्ट्र निर्माण का यह पावन कार्य शिक्षक कर रहे है।"

शिक्षा के अनेक स्तर हैं। प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा इत्यादि, किन्तु शिक्षा में प्राथमिक शिक्षा का स्तर सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह शिक्षा की पहली सीढ़ी है जिसे सफलतापूर्वक पार करके ही कोई व्यक्ति अपने अभिष्ट लक्ष्य तक पहुँच सकता है। प्राथमिक शिक्षा को दो उप स्तरों में बाँटा गया है। पहला पूर्व प्राथमिक और दूसरा उच्च प्राथमिक। कक्षा 6 से 8 तक की शिक्षा को उच्च प्राथमिक स्तर कहा जाता है। इस स्तर पर 11 से 14 वर्ष की आयु के बालक व बालिका शिक्षा ग्रहण करते हैं। उच्च प्राथमिक शिक्षा स्तर की भूमिका अन्य शिक्षा स्तर से कहीं ज्यादे महत्वपूर्ण दिखाई देती है क्योंकि पूर्व प्राथमिक शिक्षा जहाँ बच्चों के भविष्य निर्माण की नींव होती है, जिस पर उसके सम्पूर्ण जीवन का भविष्य तय होता है, वहीं उच्च प्राथमिक शिक्षा स्तर उस नींव को मजबूती प्रदान कर बच्चे के अभिष्ट उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होती है।

कार्य संतुष्टि शिक्षक के अपने कार्य से मिलने वाली स्वयं की संतुष्टि होती है। यह संतुष्टि कम वेतन व कम सुविधा में भी मिल सकती है और अधिक वेतन व अधिक सुविधा से भी मिल सकती है, अर्थात संतुष्टि आन्तरिक गुण होती है वाह्य नहीं।

प्राथमिक शिक्षा का प्रबंध केन्द्र सरकार, राज्य सरकार, स्थानीय निकायों के साथ–साथ व्यक्तिगत प्रयासों से भी होता है। इस प्रकार प्राथमिक शिक्षा का क्रियान्वयन परिषदीय तथा गैर परिषदीय दोनों क्षेत्रों के शिक्षण संस्थानों द्वारा सम्पन्न कराया जाता है। परिषदीय विद्यालय के शिक्षकों का वेतन राज्य सरकार केन्द्र सरकार की मदद से धन मुहैया कराती है। साथ ही शिक्षकों/कर्मचारियों की सेवा शर्तों में प्रतिबद्धता आदि निश्चित होती है।

किसी भी शिक्षण संस्था की प्रगति हेतु शिक्षकों की योग्यता, व्यावसायिक विकास और कार्य संतुष्टि आदि अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष होते हैं। यद्यपि वर्तमान समय में उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के विषय में विचार करने पर विदित होता है कि परिषदीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में पर्याप्त असमानता है। परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि स्थिति अच्छी मानी जाती है। यह भी विचारणीय है कि जनमानस में भी इसी प्रकार के विचार दिखाई दे रहे हैं। इसकी वास्तविकता और इसके कारणों के ज्ञानार्थ हेतु गहन अनुसंधानात्मक अध्ययन की आवश्यकता महसूस हो रही है, जिससे इसकी सत्यता का पता लगाया जा सके तथा इसके लिए कौन–कौन से कारण उत्तरदायी हैं, आदि का पता लगाकर आवश्यक सुधार किया जा सकें।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना।
2. उच्च प्राथामिक स्तर पर पुरुष व महिला शिक्षकों की कार्य

***Corresponding Author:** अश्विनी कुमार

संतुष्टि का अध्ययन करना।
3. उच्च प्राथमिक स्तर पर परिषदीय तथा गैर परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना।
4. शहरी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना।
5. शहरी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर पुरुष एवं महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना।
6. ग्रामीण क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना।
7. ग्रामीण क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर पुरुष एवं महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना।
8. शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर पुरुष तथा महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।
3. उच्च प्राथमिक स्तर पर परिषदीय तथा गैर परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।
4. शहरी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।
5. शहरी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर पुरुष एवं महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।
6. ग्रामीण क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।
7. ग्रामीण क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर पुरुष एवं महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।
8. शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

प्रत्येक शैक्षिक अनुसंधान में चयन किये गये शोध समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण किया जाना अत्यन्त आवश्यक होता है। सैद्धान्तिक, व्यवहारिक तथा शोध स्वरुप को विकसित करने में यह परिभाषीकरण सहायक सिद्ध होती है। इस शोध अध्ययन में निम्न चरो को परिभाषीकरण किया गया है –

1. **उच्च प्राथमिक स्तरः** ऐसे विद्यालय जिसमें कक्षा छः से आठ तक के विद्यार्थी अध्ययन करते हैं।
2. **शिक्षकः** विद्या/ज्ञान सिखलाने वाला व्यक्ति।
3. **कार्य संतुष्टिः** कार्य संतुष्टि का अर्थ व्यक्ति का कार्य के प्रति लगाव, झुकाव, नौकरी में पदोन्नति के अवसर, सुरक्षा, सामाजिक प्रतिष्ठा, आय की पर्याप्तता आदि अर्थों में लिया गया है।

शोध कार्य का महत्व

शोध समस्या पर शोध कार्य करने से पूर्व यह जानना आवश्यक होता है कि उस शोध समस्या का हल विभिन्न दृष्टिकोणों से कितना आवश्यक है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि चयनित किये गये शोध समस्या का हल करने के पश्चात इससे समाज व राष्ट्र को कितना लाभ होगा। प्रस्तुत शोध समस्या की उपयोगिता कितनी है इसकी विवेचना नीचे की पक्तियों में प्रस्तुत करने का प्रयास शोधकर्ता ने किया है जो निम्नलिखित है

भावी शिक्षकों के लिएः यद्यपि प्रस्तुत शोध कार्य में उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि को जानने का प्रयास किया गया है। परिणाम के आधार पर भावी शिक्षकों के लिए एक नई दिशा इस शोध कार्य के द्वारा प्रदान किया जा सकता है कि वास्तव में जो शिक्षक अपने कार्य से संतुष्टि है या नहीं है उसका प्रभाव कक्षा–कक्ष में पड़ने वाले विद्यार्थियों के ज्ञान पर भी पड़ता है या नहीं। यदि पड़ता है तो किस प्रकार की व्यवस्था शिक्षा व्यवस्था में करें कि भावी शिक्षक अपने कार्य से संतुष्टि हो पाये।

शिक्षा–शिक्षकों की दृष्टि सेः इस अध्ययन के परिणाम से जो सुझाव प्राप्त होगे उसका प्रत्यक्ष लाभ वर्तमान में कार्य करने वाले शिक्षा–शिक्षकों को मिल सकेगा।

सरकार की दृष्टि सेः इस अध्ययन के माध्यम से केन्द्र और राज्य सरकार को उनके द्वारा चलायी जा रही शिक्षक प्रशिक्षण की किन्यावयन में होने वाली व्यवहारिक दिक्कतों के बारे में भी प्रभावी समाधान मिल सकेगा।

अनुसंधान के दृष्टि सेः इस अध्ययन से शिक्षा के क्षेत्र में नवीन अनुसंधान को प्ररित किया जा सकेगा।

सग्बन्धित साहित्य का अध्ययन

भारत तथा विदेशों में शिक्षक कार्य संतुष्टि चर पर किये गये शोध कार्यों का अवलोकन शोधकर्ता ने किया है, जो निम्नलिखित है –

भारत में किये गये शोधों का पुनरावलोकन

कौर, जसदीप (2018) ने "श्रीगंगानगर जिले में कार्यरत शिक्षित महिलाओं की अपने कार्य के प्रति संतुष्टि का विश्लेषणात्मक अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया। अध्ययन के उद्देश्यों में शिक्षण एवं अन्य व्यवसायों से सम्बन्धित कार्यरत शिक्षित महिलाओं की व्यावसायिक कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना था। परिकल्पना निम्न थे–शिक्षण एवं अन्य व्यवसायों से सम्बन्धित कार्यरत् शिक्षित महिलाओं की व्यावसायिक कार्य संतुष्टि के मध्य सार्थक अंतर नहीं है। अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। श्रीगंगानगर जिले से यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा 600 महिलाओं को न्यादर्श में शामिल किया गया है। डॉ0 अमर सिंह व डॉ0 टी0 आर0 शर्मा द्वारा निर्मित व प्रमापीकृत 'व्यावसायिक कार्य संतुष्टि मापनी' उपकरण का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकीय विधियों में मध्यमान, प्रमाणित विचलन, क्रांन्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष में पाया गया कि शिक्षण एवं अन्य व्यवसायों से सम्बन्धित कार्यरत् शिक्षित महिलाओं की व्यावसायिक कार्य संतुष्टि के मध्य सार्थक अंतर नहीं है।

यति, कंचन (2018) ने "स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि, शैक्षिक योग्यता तथा उनकी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया। अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। यादृच्छिक गुच्छ प्रतिदर्श चयन विधि से दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध तीन जिले गोरखपुर, कुशीनगर व देवरिया में स्थित महाविद्यालयों का चयन लाटरी विधि से तथा शिक्षकों का चयन आकस्मिक विधि से करके न्यादर्श में शामिल किया गया है। प्रो0 आर0के0 सिंह द्वारा निर्मित व प्रमापीकृत 'कार्य संतुष्टि मापनी' उपकरण का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकीय विधियों में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, कांत्तिक अनुपात व टी–मान का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष निम्न थे–प्रथम वित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक है। दूसरा वित्तपोषित महाविद्यालयों के शहरी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शहरी शिक्षकों से अधिक है। तीसरा वित्तपोषित ग्रामीण शिक्षकों की कार्य संतुष्टि स्ववित्तपोषित ग्रामीण शिक्षकों की कार्य संतुष्टि से उच्च है। चौथा वित्तपोषित महाविद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों की कार्य संतुष्टि शहरी शिक्षकों से उच्च है। पांचवाँ वित्तपोषित शहरी महाविद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि स्ववित्तपोषित ग्रामीण महाविद्यालयों के शिक्षकों से अधिक है।

चम्याल, देवेन्द्र सिंह (2019) ने "विकासखण्ड भैसियाछाना के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया। अध्ययन के उद्देश्य निम्न थे–पहला निवास स्थान के आधार पर (ग्रामीण व शहरी) शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना। दूसरा लिंग के आधार (पुरुष व महिला) पर शिक्षकों की कार्य

संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना। तीसरा शैक्षिक विषय के आधार पर (कला व विज्ञान) शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना। चौथा राजकीय व निजी विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना। अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। नैनीताल के कुमाऊ जिले के विकासखण्ड भैसियाछाना के 30 राजकीय व निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत 60 शिक्षकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से न्यादर्श में शामिल किया गया है। डॉ0 प्रमोद कुमार गुप्ता व डी0 एन0 मुथा द्वारा निर्मित व प्रमापीकृत 'शिक्षक कार्य संतुष्टि मापनी' उपकरण का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकीय विधियों में मध्यमान, मानक विचलन व 'टी' मान का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष निम्न थे– पहला ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि तथा शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि अलग अलग है। दूसरा पुरुष अध्यापकों की कार्य संतुष्टि तथा महिला अध्यापिकाओं की कार्य संतुष्टि लगभाग समान है। तीसरा कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के शिक्षक शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि अलग अलग है।

विदेशों में किये गये शोधों का पुनरावलोकन

होपाक (1935)[55] ने "ए स्टडी ऑफ जॉब सैटिसफैक्शन एट सेकेण्डी स्कूल टीचर्स" विषय पर शोध कार्य किया। अध्ययन में 500 शिक्षकों को न्यादर्श हेतु चुना गया है। अध्ययन के निष्कर्ष निम्न थे – प्रथम संतुष्ट शिक्षकों में धार्मिक प्रवृत्ति की अधिकता पायी गयी। दूसरा संतुष्ट शिक्षकों में सांवेगिक रुप से समायोजित होने की प्रवृत्ति दिखाई दी। तीसरा संतुष्ट शिक्षकों में सामाजिक सम्बन्ध उत्तम थे। चौथा संतुष्ट शिक्षक दस हजार से अधिक जनसंख्या वाले शहरों में पढ़ाया करते थे। पांचवाँ संतुष्ट शिक्षकों में सफलता का अनुभव अधिक पाया गया। छठा संतुष्ट शिक्षकों में पारिवारिक प्रभाव एवं सामाजिक प्रतिष्ठा अधिक पायी गयी। सातवाँ असंतुष्ट शिक्षक में समरसता और थकान के अधिक प्रभाव देखे गये।

ओलाडेवा, एस0 ए0 (2001)[56] ने "शिक्षकों के शिक्षण के प्रति अभिव्यक्ति का अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया। इन्होंने अन्य प्रकार के अवसरों की उपलब्धता, व्यावसायिक विकास, उत्तरदायित्व ग्रहण करना, स्कूल का पर्यवेक्षण, प्रधानाचार्य के साथ व्यावसायिक व्यैक्तिक अन्तःक्रिया आदि बिन्दुओं पर शोध अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि ऐसे शिक्षक जो व्यावसायिक शिक्षण से संतुष्ट थे उनकी सार्थक रुप से अभिव्यक्ति भी अच्छी थी, किन्तु उनका समाज में आर्थिक रुप से प्रभाव कम था।

शोध विधि–शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि द्वारा का प्रयोग किया गया है।

डाटा संग्रह के स्रोत

शोध कार्य हेतु डाटा संग्रह के स्रोत के लिए गोरखपुर मण्डल के चार शैक्षिक जिलों गोरखपुर, महराजगंज, देवरिया व कुशीनगर जिले में स्थित उच्च प्राथमिक स्तर के परिषदीय तथा गैर परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों को शामिल किया गया है। न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है। शोधकर्ता ने कुल 800 शिक्षकों कों न्यादर्श में शामिल किया है, जिसमें शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों के परिषदीय तथा गैर परिषदीय विद्यालयों के महिला एवं पुरुष शिक्षकों को शामिल किया गया है।

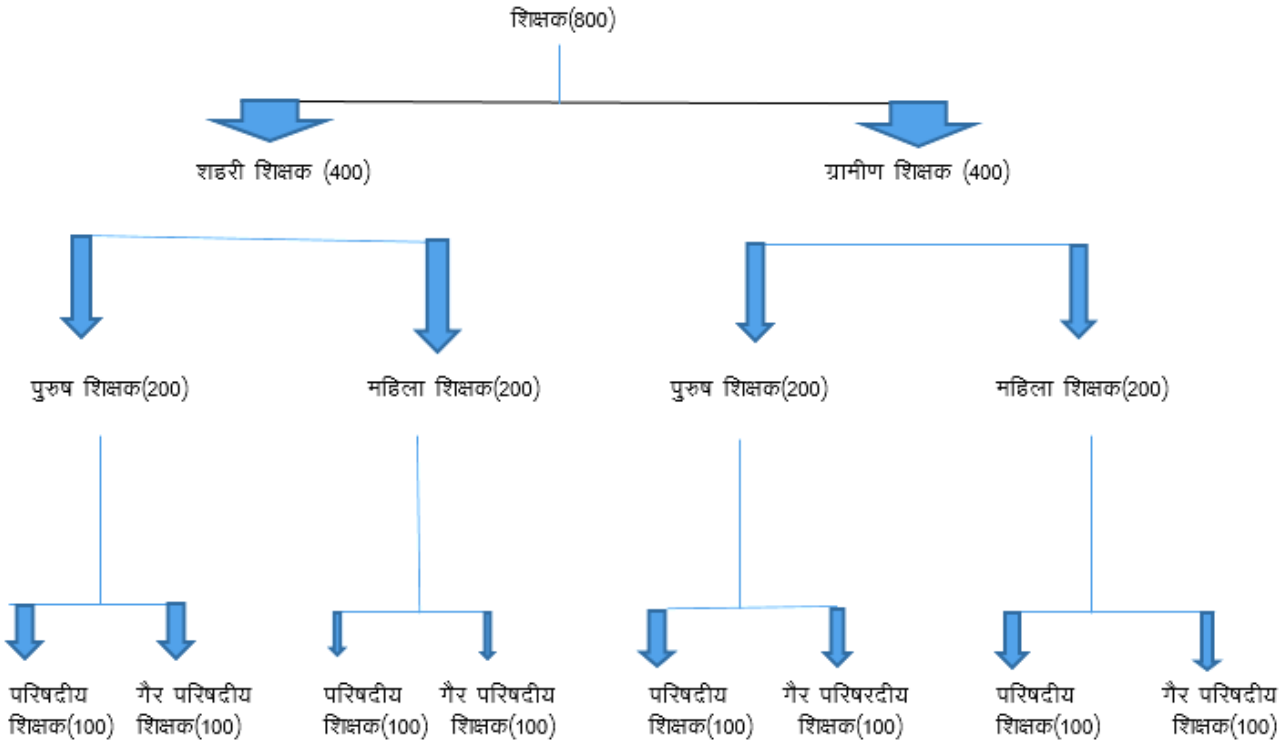

चित्र 1: शिक्षकों का आवंटन

शोध का सीमांकन

शोध कार्य की गहनता को देखते हुए प्रस्तुत शोध की सीमा निधारित करना आवश्यक प्रतीत हो रहा है। समय व साधन के सीमित होने के कारण इसे निम्न सीमाओं में बाधा गया है –

1. अध्ययन में मात्र उ0प्र0 के बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित उच्च प्राथमिक स्तर (कक्षा 6 से 8 तक) के परिषदीय तथा गैर परिषदीय (एडेड) विद्यालयों को शामिल किया गया है।
2. अध्ययन में केवल कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि चर तक ही सीमित रखा गया है।
3. अध्ययन में प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित दोनों प्रकार के शिक्षकों को शामिल किया गया है।
4. अध्ययन में महिला तथा पुरुष दोनों वर्गों को शामिल किया गया है।
5. अध्ययन में ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के विद्यालयों को

शामिल किया गया है।

6. उ0प्र0 के गोरखपुर मण्डल के चार शैक्षिक जिले गोरखपुर, महराजगंज, देवरिया व कुशीनगर को अध्ययन क्षेत्र हेतु शामिल किया गया है।

शोध उपकरण

प्रदत्त संग्रह के लिए डॉ0 मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित व प्रमापीकृत 'शिक्षक कार्य संतुष्टि मापनी' का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी विधि

प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिए प्रतिशत, माध्य, माध्य विचलन एवं टी–परीक्षण सांख्यिकीय प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष

- उच्च प्राथमिक स्तर पर पुरुष एवं महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर है। महिला शिक्षक पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा अधिक संतुष्टि पायीं गयीं।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर परिषदीय तथा गैर परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर है। परिषदीय विद्यालय के शिक्षक गैर परिषदीय विद्यालयों की अपेक्षा अधिक अपने कार्य से संतुष्ट पाये गये।
- उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी शिक्षकों और ग्रामीण शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर है। शहरी शिक्षक ग्रामीण शिक्षकों की अपेक्षा अपने कार्य में अधिक संतुष्ट पाये गये।
- शहरी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर पुरुष एवं महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर है। शहरी क्षेत्र की महिला शिक्षक शहरी क्षेत्र के पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा अपने कार्य से अधिक संतुष्टि पायी गयीं।
- ग्रामीण क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर पुरुष एवं महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर है। ग्रामीण क्षेत्र के पुरुष शिक्षक ग्रामीण क्षेत्र के महिला शिक्षकों की अपेक्षा अपने कार्य में अधिक संतुष्ट पाये गये।
- शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर है। शहरी क्षेत्र के शिक्षक ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की अपेक्षा अपने कार्य में अधिक संतुष्ट पाये गये।

प्रस्तुत अध्ययन में उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि औसत से अधिक है। अतः वर्तमान में शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में वृद्धि हुई है और वे अपने व्यवसाय के प्रति निष्ठावान है।

भावी शोध हेतु सुझाव

1. प्रस्तुत शोध गोरखपुर मण्डल के चार शैक्षिक जिले गोरखपुर, महराजगंज, देवरिया व कुशीनगर को ही शोध में शामिल किया गया है। भावी शोध हेतु अन्य मण्डल या जिले को भी शोध हेतु लिया जा सकाता है।
2. प्रस्तुत शोध में पुरुष व महिला वर्ग तथा शहरी व ग्रामीण स्तर के क्षेत्र को ही अध्ययन हेतु शामिल किया गया है। भावी शोध हेतु इसके अतिरिक्त अन्य वर्ग तथा क्षेत्र को भी अध्ययन में शामिल किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध के न्यादर्श में 800 शिक्षकों को शामिल किया गया है। भावी शोध हेतु इससे अधिक न्यादर्श को शामिल किया जा सकता है।
4. प्रस्तुत शोध में केवल उच्च प्राथमिक स्तर के परिषदीय तथा गैर परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों को ही अध्ययन में शामिल किया गया है। भावी शोध हेतु माध्यमिक, महाविद्यालय स्तर के शिक्षकों को शामिल किया जा सकता है।
5. भावी शोध हेतु शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति तथा कार्य संतुष्टि आदि चर को भी
   शामिल किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शेखर, के0 (2001), "प्राइमरी स्कूल टीचर्स एजुकेशन प्रोग्राम इन एवेलवेटिव स्टडी ऑफ डाइट", नई दिल्लीः डिस्कवरी पब्लिशिंग हॉउस।
2. गाडगिल (1980), "नगर पालिकीय प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के कार्यों का एक अध्ययन", महाराष्ट्रः विश्वविद्यालय मुम्बई।
3. त्रियोगी, नारायण (2001), "गौाखपुर मण्डल के प्राथमिक विद्यालयों में ह्रास की प्रकृति एवं उपचार", गोरखपुरः दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय।
4. श्रीवास्तव, अंकिता (2007), "गोरखुर मण्डल में विभिन्न अभिकरणों द्वारा संचालित प्राइमरी में अध्ययनरत बालिकाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं उन्हें उपलब्ध शैक्षिक सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन", गोरखपुरः दीनदयाल उपाध्याय गोरखपर विश्वविद्यालय।
5. शाह (1982), "नगर पालिका एवं व्यक्तिगत अधिकारों द्वारा संलालित प्राइमरी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन", ग्वालियरः शिवाजी विश्वविद्यालय।
6. www.ncert.nic.in
7. www.education.nic.in
8. www.cbse.nic.in
9. www.springerlink.com
10. www.google.com